स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटक : समस्या ओ समाधान

-बिन्दा कुमारी,
शोधार्थी (मैथिली विभाग)
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

नाट्य 'नट्' धातुसँ नि"पन्न भेल अछि जकर अर्थ अछि अभिनय ।[1] वृहत् कोषग्रंथ 'षब्द–कल्पद्रुम'मे एकर परिभा"ाा एहि तरहें कहल गेल अछि–'नटानां कार्यं (कर्म) नाट्यम् ।'[2] नाट्य 'ाास्त्रविद् आचार्य भरतमुनिक विचारसँ 'नाना भाव समन्वित भिन्न–भिन्न अवस्थामे जे लोकक आचरण होइछ, तकर अनुकरण नाट्य थिक ।[3] अर्थात् भूत अथवा वर्तमान कालक घटना वा व्यक्तिकेँ कर्मफलक अनुषरणकऽ ओकरा जँ मंचपर उपस्थापित कयल जाय तँ ओकरा नाट्य अथवा नाटक कहल जाइछ ।

वस्तुतः ओ व्यक्ति वा घटनाक प्रस्तुति वैह मूल व्यक्ति बनिकऽ कयल जाइछ । ई मात्र एहि संसार अर्थात् मृत्युलोकक घटना, चरित्र अथवा भावाधारित नहि होइछ । 'तीनू लोकक सभ प्रकारक भावक अनुकरण नाट्यमे होइछ।'[4] *अभिनय दर्पणक* लेखक नन्दिकेष्वर ग्रंथक आरम्भेमे कहैत छथि जे 'एहि संसारमे भेनिहार समस्त क्रिया जनिक आंगिक अभिनयमे प्रकट होइछ, संसारमे जतेक भा"ाा अछि, सएह जनिक वाचिक अभिनय थिक, चन्द्र तारादि जनिक आहार्याभिनयक द्योतक थीक ताहि सात्विक रूप षिवकेँ हम नमस्कार करैत थिक।[5]

सोझ 'ाब्दमे अभिनय नाटक थिक । मानव–दानव, देवी–देवता, दु"ट–सज्जन, भूत–प्रेत किंवा जड़–चेतन सभक जीवनक घटना, कर्तव्याकर्तव्य कार्य, सामाजिक व्यवस्था क यथार्थ अभिज्ञान आ उचित–अनुचितक आरेखन करैत कोनो मंचपर जे किछु प्रस्तुत कऽ लोकक अनुरंजन–मनोरंजन कयल जाइत अछि ओकरे अभिनय कहल जाइछ ।

आन भारतीय भा"ाक अपेक्षा मैथिली नाटकक इतिहास बड़ प्राचीन अछि । भारतीय भा"ाक आद्य गद्य लेखक कविषेखराचार्य ज्योतिरीष्वरक लिखल नाटक 'धूर्त समागम' मैथिलीए नहि प्रत्युत् सभ भारतीय भा"ाक प्रायः पहिल नाटक अछि, मैथिलीक तँ ओ निधि अछिए । किछु विषि"ट विद्वानक विचारसँ कीरतनियाँ नाच वस्तुतः नाच नहि नाटके छल ।

एहि प्रकारक विद्वानमे इतिहासकार डा.जयकान्त मिश्र प्रमुख छलाह । ओ अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे एहि वि"ायपर एकटा एगारहम अध्याय लिखि अपन मंतव्य सुस्थिर कयने छथि ।[6] किछु अन्यान्यो विद्वान सभ एहि पक्षमे छलाह जे कविषेखर ज्यातिरीष्वरसँ पूर्वक किरतनियाँ नाचक अतिरिक्त पमरिया नाच, जट–जटिन नाच आदि नाटके छल । डा. काँचीनाथ झा 'किरण' जीक 'ाब्दमे 'मिथिलामे जट–जटिन नाच कहवैत अछि । मुदा एहिमे दू दल रहैछ–उत्तर प्रत्युत्तर होइछ । चोरि, दरोगा आगमन, गवाहिक इजहार, चोरक गिरफदारी, सजाय आदि घटना रहैत अछि आ से सभटा गद्यमे होइत अछि । तञ जट जटिन वस्तुतः नाटक थिक ।'[7]

नाटकक आनन्द दूहु प्रकारसँ उठाओल जाइत अछि–पढिकऽ आ मंचनक द्वारा । एकर आनन्द केवल विद्वज्जनेटा नहि लऽ सकैत छथि प्रत्युत् मंचपर अभिनय कयल नाटकसँ अनपढ़ ग्रामीण, उजढ़ देहाती सेहो आनन्द और ज्ञान दुहू लाभ प्राप्त कऽ सकैत छथि ।

मैथिली नाटकक उद्भवक प्रसंग कोनो निष्चित समय सुस्थिर करब सम्भव नहि प्रतीत होइत अछि । हँ, लिखित नाट्य परम्पराक 'ुभारम्भ कविषेखराचार्य ज्योतिरीष्वरक 'धूर्तसमागम'सँ भेल अछि । 'ई अपन मूल प्रहसन (धूर्तसमागम)क रचना हरसिंह देवक नेपाल–पालायनसँ (अर्थात् 1324इ.)क बाद कएलन्हि, ताहिसँ मानल जाए सकैत अछि जे एकर मैथिली रूप हिनक अन्तिम रचना थिक ।'[8] ज्योतिरीष्वरक समय 1280 सँ 1340 अछि । एहिसँ ई निर्विवाद रूपें कहल जा सकैछ जे मैथिली नाटकक उद्भव चौदम 'ताब्दीक चारिम दषकमे भेल छल होयत ।

आरम्भिक मैथिली नाट्याकाषमे पनिषोखा (इन्द्रधनु"ा)क सातो रंग जकाँ सातटा नाटकार गोविन्द (नलचरित नाट), रामदास झा (आनन्दविजय नाटिका), देवानन्द (उशा– हरण), उमापति उपाध्याय (पारिजातहरण), रमापति उपाध्याय (रूक्मिणी परिचय वा रूक्मिणी हरण), लाल कवि (गौरी स्वयंवर नाटक), नन्दीपति (कृ"णकेलि

माला) भेल छलाह । एतदतिरिक्त श्रीकान्त गणक (श्रीकृष्णजन्म रहस्य), भानुनाथ झा (प्रभावती हरण), ह"ानाथ झा (उ"ाहरण आ माधवानन्द) तथा युग प्रर्वतक कवीष्वर चन्दा झा (अहल्या चरित)क गणना सेहो नीक नाटककारमे कयल जाइत छथि ।

एही क्रममे *मानचरितक* नाटककार गोकुलानन्द, *पारिजात हरण* आ *गौरी परिणयक* रचयिता षिवदत्त, *रूक्मांगदक* नाटकार जयानन्द, *गौरी स्वयंवरक* लेखक कान्हाराम आ *उ"ाहरणक* प्रणेता रत्नपाणि सेहो उल्लेखनीय नाटककार भेलाह ।

डा. जयकान्त मिश्रक विचारसँ 'वर्तमान (बीसम) 'ताब्दीक आरम्भ धरि मैथिलीमे कीरतनिञा नाटकक प्राचीन महत्त्वपूर्ण परम्परा जीवित छल । समस्त मिथिला आ नेपालमे एहि काल धरि कतोक व्यवसायी वा अव्यवसायी नाटक मंडली किरतलिञा नाटकक अभिनय करैत छल । एहि परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाटककार छलाह पण्डित ह"ानाथ झा, विष्वनाथ झा प्रसिद्ध ''बालाजी'' आओर राजपण्डित बलदेव मिश्र । ...ई (ह"ानाथ झा) उ"ाा हरण, माधवानन्द आओर राधाक"ण–मिलन–लीला लिखने छथि ।'[9]

आधुनिक युग (बीसम 'ताब्दी) मे मैथिली नाटकक सूत्रपात कएनिहार पं. जीवन झा (1908–1920) थिकाह । ... जीवन झा सेहो अपन मातृभा"ाकेँ समुन्नत देखए चाहैत छलाह । तैँ आधुनिक युगमे मैथिलीमे नाटक लिखब इएह प्रारम्भ कयलैन्हि ।'[10.]

एकैसम 'ताब्दीक एहि प्रथम चरण धरि प्रायः सात सय व"ाक अवधिमे मैथिली भा"ाामे कतेक नाटक लिखल गेल अछि–एकर कोनो मानक विवरणी उपलब्ध नहि अछि । ओना एकटा मोटामोटी अनुमानक अनुसार एहि बीच प्रायः 'ताधिक नाटककार अवष्य भेल होयताह ।

प्रायः आधा 'ताब्दीसँ अधिक दिन पूर्वे, सन् 1965 ई.मे पटना विष्वविद्यालयक प्राध्यापक लेखनाथ मिश्र नाटके वि"ायपर 'ोध कार्य कऽकय पीएच–डी. उपाधि प्राप्त कयने छलाह, जकरा ओ 1978 मे *मैथिली नाटक : उद्भव ओ विकास* नामे प्रकाषित कयलनि । हुनका अनुसारें आइसँ प्रायः 55 व"ा पहिने 161 मैथिली नाटक आ 124 एकांकीक एहि अवधिक अछि । एहि सूचीमे पूर्व प्रकाषित ऐतिहासिक कथानकपर लिखल नाटक सभ आ किछु अप्रकाषितो नाट्य कृत्ति सभ अछि।'[11]

भऽ सकैछ किछु नाटक हुनका दृ"टपथसँ ओत रहि गेल होअय, अप्रषस्त लेखक
केर रचना गणनाक क्रममे छुटि गेल होअय किवा सुदूर ग्रम्यांचलक अप्रषस्त नाट्य मंडलीमे खेलायल जायवला नाटकक अभिज्ञान हुनका नहि भऽ पाओल होइनि ।

पछिला बीसम 'ताब्दीक मध्याह्नसँ प्रायः कनिके पहिने अपन देष भारत स्वतंत्रता सूर्यक अनमोल भास्वर रष्मिसँ आलोकित भेल । रातुक गहन तमिस्राच्छादित लोक जेना एहि अनुपम आलोकसँ अभिभूत बुझाइत छल । सम्पूर्ण देषक जनता अपना हृदयमे एकटा नव आषा–आभा, एकटा नव उमंग–तरंग, एकटा नव आकाष–प्रकाषक स्वागत करबाक प्रबल उद्वेगसँ आच्छादित सन अनुभव करैत छल ।

दष"ाक बहुवर्णी स्वरूपक, विविधि धर्म, जाति–धर्म–सम्प्रदायक हृत्प्रदेषक कोन– कोनमे अपन एहि नवालोकित भारतमाताक स्वागतक निमित्त कोढ–करेज काढिकऽ अर्पित करबाक, अपन जान–प्राण समर्पित करबा हरहोरि जकाँ मचि गेल छल । भला साहित्य –जगत ओहिसँ कोना वंचित रहि सकैत छल?

सम्पूर्ण देषक विभिन्न भा"ाा–साहित्यमे सेहो एहि नव स्वतंत्रता–सविताक आराधना– आवाहन नव–नव रीतिसँ, नव–नव विधाक नव–नव सर्जनासँ करबा लेल सन्नद्ध भऽ उठलाह ।

भारतीय भा"ाा साहित्यमे आठमे–नवम 'ताब्दीसँ अपन प्रभासँ संसारकेँ चमत्कृत करैत रहनिहारि, जगज्जननी सीताक मुँहक भा"ाा, मातृभा"ाा मैथिलीक साहित्य सेहो अपन विविध विधाक रचनासँ मिथिला सहित सम्पूर्ण रा"ट्र–राज्यक नीराजन करबामे पील पड़ल छल ।

आधुनिक युगमे भारतमे सेहो असंख्य नाटकक लेखन आ मंचनक ुभारम्भ भेल । आरम्भमे एकर गति जहिना तीव्र छल तहिना एकैसम 'ताब्दीक समारम्भ होइत–होइत अत्यन्त मन्द भऽ गेल प्रतीत होइत अछि । स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद मैथिल समाजमे व्याप्त कुरीतिकेँ दृ"टपथपर राखि अनेक नाटकक रचना भेल छल । रा"ट्रप्रेम मूलक कथातत्त्वक माध्यमसँ विद्वान लेखक, नाटककार सभ द्वारा अपन क्षेत्रक आम जनमानसमे अपन पछरल रा"ट्रक, अपन कुंठाग्रस्त देषक प्रति दायित्वबोधक बीहनि छींटि, कर्त्तव्य भावनाक टेमी जरेबाक नीक जकाँ सफल प्रयास कयल गेल ।

सन्1962मे जखन चीनी आक्रमण भेल छल, तत्पष्चात् 'लद्दाखक मोर्चा','परल काज', 'हुनक पुत्रवधू', 'सूर्य उगि रहल अछि', आ 'जीवनदान' सन–सन अनेक नाटकक रचना भेल छल । परिणामतः सहस्रो

मैथिलजन, नर–नारी अपन क्षेत्रिय कूप– मण्डुकताक प्रगाढ़ नीन्न तोड़ि अपन देष भारतभूमिक रक्षामे अग्रसर भेलाह ।

दोसर दिस युग–युगसँ संसारक सिरमौर, पथप्रदर्षक मिथिला समाजमे पसरल रूढ़िग्रस्तता, कुसंस्कारक मकरजालमे फँसिकऽ अवनतिक गहीर खाधिमे उबडुबकऽ रहल छल । स्वातंत्र्योत्तर भारतक ओहि मिथिलामे बाल–विवाह, बहुविवाह, वृद्ध–विवाह, अनमेल विवाह आ बिकौआ–विवाह, छोट–पैघ, उँच–नीच, जाति–पाति इत्यादि विभिन्न प्रकारक समस्या उत्तरोत्तर बढ़ले जा रहल छल । मिथिलाक षिथिला दिस अग्रसर होइत चरणकेँ पहिने स्थिर कऽकय पुनः उन्नतिक उत्तुंग षिखर दिस अग्रसर करबामे मैथिली साहित्य, विषे"ाकऽ नाटक हुनका लोकनिक सुदृढ़ पथारूढ़कऽ मजगूतीसँ ठाढ़ कयलक ।

गहन अन्हारक बीच उगैत इजोरिया जकाँ, एहि वि"ाम परिस्थितिसँ उबारबामे क्रांति कारी मैथिली नाटककार पं. जीवन झा आ मुंषी रघुनन्दनलाल दास अपन सुषक्त लेखनी लऽ ठाढ़ भेल छलाह आ अपन–अपन सषक्त नाटकक माध्यमे षिथिला मिथिला मे क्रान्तिक जे उद्घो"ा कयलनि ताहिसँ तात्कालिक समस्या सभक समाधान तँ होयबे कयल, हुनका लोकनिक वांछित सफलता तँ भेटबे कयलनि; हुनक नाटक सभसँ जे सुधारात्मक विचारधाराक प्रस्फुटन भेल, तकर सुगन्धिसँ अखनहुँ मिथिलाक नाट्य पु"पवाटिका महमहा रहल अछि ।

भारतीय स्वातंत्रताक पूर्व आ लगले पष्चात् कोनो मजगूत नाट्य परम्परा मैथिली साहित्यमे दृ"ि पथपर नहि अभरैत अछि । मिथलामे जे दू चारिटा व्यावसायिक नाट्य मंडली, नाटक कम्पनी छल ओ सभ रा"ट्रीय भावधाराक परिपु"िटकेँ ध्यानमे राखि हिन्दी नाटक खेलाइत छल । ने केवल सम्पूर्ण मिथिला प्रत्युत् देषक विभिन्न क्षेत्र सभमे घूमि– घूमिकऽ राधेष्याम रामायणक आधारपर *रामलीलाक* अभिनय कयनिहार दर्जनों नाटक–रामलीला पार्टी सभक भा"ाा हिन्दीए छल । श्रीषजी सेहो स्वातंत्र्योत्तर मिथिलामे मंचोपयागी नाटकक चर्च करैत कहैत छथि–'स्मरण रहय जे अधिकांष नाटक अभिनयक उद्देष्यसँ नहि रचित भेल, एकर रचना भेल साहित्यक एहि विधाकेँ मैथिलीमे प्रयोग करबाक दृ"िटएँ।... ... अभिनय जँ भेवो कयल तँ छोट–छोट नाटक वा एकांकीक । कारण मैथिलीक कोनो स्थायी रंगमंच तँ छल नहि जकरा हेतु नाटकक रचना होइत । अतः गामघरक क्लब वा स्कूल कॉलेजक सोसाइटीक अप्रषिक्षित अभिनेता द्वारा पैघ नाटकक अभिनय होयब कोना संभव छल?'[12]

प्रायः स्वातंत्र्योत्तर नाटकक सभसँ प्रमुख समस्या छल मैथिली भा"ाक अथवा मिथिलामे रंगमंचक अभावक । एहि कारण पहिलुक लिखल आ एहूकालमे प्रणीत नाटकक मंचीय स्वरूप उभरि नहि सकल, फलस्वरूप नाटकक विधाक मूल स्वरूपक विकास स्वतंत्रताक प्रायः एक दषक धरि नहि भऽ सकल–1947सँ 1955–56 धरि । श्रीषजीक 'ाब्दमे '1955क पष्चात् एकांकी नाटक अधिक लिखल गेल आओर वस्तुतः एकर रचनाक आदर्ष अंग्रेजीक व्दम बज चसल सएह भेल । अतः एकांकीमे पैघ नाटकक अपेक्षा अधिक आधुनिकताक समावेष भेल, मुख्यतः युगबोध ओ उपनिबद्ध पात्रक अन्तर्द्वन्द्वक अभिव्यक्तिमे।'[13]

स्वतंत्रताक पष्चात् मैथिली नाटकक प्रगतिक अवरोधक एकटा और दोसरो महत्वपूर्ण कारक रहल अछि, जाहि प्रसंग कोनो इतिहासकारक ध्यान नहि गेलनि अछि अथवा भऽ सकैछ ओ अपन क्षेत्रिय त्रुटिकेँ उघार नहि करऽ चाहैत होथि । ओ अछि– महिला चरित्रक अभिनयक लेल स्त्री कलाकार (अभिनेत्री)क सर्वथा अभाव ।

एहिठामक (मथिलाक) समाजमे परदा प्रथाक पालन दृढतापूर्वक कयल जाइत छल । धर्मक दृ"िटएँ स्त्रीगणक उठब–बैसबसँ लऽकऽ रहन–रहन आदिपर कठोरता पूर्वक पुरु"ा लोकनिक नियंत्रण छल । एहि ठामक महिला 'असूर्यम्प"या' (सूर्यकेँ नहि देखनिहारि) होइत छलीह । एहना स्थितिमे घरसँ बाहर निकलि मंचपर नर्तक–नर्तकी जकाँ अभिनय करतीह –एहन कल्पनो करब समाजद्रोही बात छल ।

यद्यपि अंग्रेजक आगमन आ ओकर स्त्रीगणक खुजल व्यवहारसँ षिक्षित समाजमे स्त्रीस्वातंत्र्यक बीहनिक सुगबुगी यत्र–तत्र होइत रहैत छल, छिटा रहल छल, ओकर चर्च –वर्च यदा कदा होइत रहैत छल मुदा मिथिलाक पुरातनपंथी विचारधारा, अषिक्षित अभिभावक गणक रूढिवादी प्रवृत्ति स्त्रीगाणक एहि प्रकारक प्रगतिमे पैरक बेड़ी जकाँ खूब दृढतापूर्वक गछारने छल ।

स्वतंत्रताक पष्चातो प्रायः एक डेढ़ दषक धरि ई प्रवृत्ति नाटक आ रंगमंचक विकासमे बड़का बाधक बनल रहल । षिक्षाक प्रचार–प्रसार, रेडियो–सिनेमा आदिक पहिने नगर आ पुनः ग्राम्यांचलमे प्रवेष आ आमलोकक विष्वक उन्नतिषील, प्रगतिवादी विचार–धाराक प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृ"िटकोणसँ एहि प्रवृत्तिमे क्रमषः सुधार होयब प्रारम्भ भेल जे स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटकक विकासमे सहायक भेल ।

एकटा और बाधक तत्त्व छल पारम्पारिक 'ाास्त्राधारित नाटक लेखनक प्रवृत्ति । एहिसँ बहु अंकीय पैघ–पैघ, भरि–भरि राति खेलल जायवाला नाटकक रचना होइत छल । 'ाास्त्रीय आधारपर लिखित नाटककेँ

मंचपर प्रभावी रूपसँ उपस्थापन नहि भऽ पाबैत छल । एहू कारणे स्वतंत्रताक पष्चात् किछु दिन धरि नाटकक विकास अवरूद्ध रहल ।

साहित्यक विभिन्न विधाक विकासक मूल छल संसारक देष सभक बढैत पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, छोट होइत विष्वक स्वरूप, मानव मनक मूलमे बढैत एकात्मभावक उर्जस्वल ज्ञान, उदारवादी प्रतिस्पर्धात्मक विचार–धारा आ ओकर भारतीय, विषे"ाकऽ मिथिलापर पड़ैत ओकर प्रभाव । आकाषवाणी (रेडियो)क क्षोत्रिय प्रसाररण आ दूरदर्षनक सम्पूर्ण देषमे प्रचार–प्रसारसँ लोकके ँ छोट–छोट नाटक आ ओकर गहीर प्रभाव दिष ध्यान गेल । मैथिली नाटककार लोकनिपर एकरा सभक त्वरित प्रभाव पड़ल, आ ओ सभ नव तकनीकपर आधारित एकांकी नाटक लिखब आरम्भ कयलनि ।

मिथिलामे बढैत आधुनिक षिक्षाक आ आधुनिक उदारवादी विचारधाराक बढैत प्रभावसँ पोंगापंथी विचारधारा कमजोर पडैत गेल । स्त्री षिक्षामे आषातीत वृद्धि आ स्त्री –पुरु"ाक उच्चादर्षक अनुषरण आदिसँ जहिना जन–जीवन आन–आन क्षेत्रमे तीब्र गतिसँ विकास भेल तहिना मिथिलामे, मैथिली साहित्य, विषे"ाकऽ नाटकमे सेहो नव समन्वयक, नव उर्जस्वल आलोक धाही स्प"ट दृ"टगोचर होमऽ लागल ।

ओना पं.जीवन झा बीसम 'ताब्दीक आरम्भहिमे एहन पहिल आधुनिक नाटकार भेलाह जे अपन नाटकक रचना मैथिली नाट्य मंचके ँ ध्यानमे राखिकऽ कयलनि। मुदा क्षणे–क्षणे रंग–बदलैत एहि देषक रंगमंचक बदलैत प्रतिमानक अनुरूप नाटकक सृजनमे अपेक्षित परिवर्तन मिथिला आ मैथिली नाटकमे नहि भऽ पाबैत छल । ओहि कालक दूटा सुप्रसिद्ध नाट्यकृति (जीवनझा)क *सुन्दर संयोगक* अपेक्षा *मिथिला* नाटकमे मंचक अनुकूलतापर अधिक ध्यान देल गेल छल यद्यपि एकर पैघ–पैघ संवाद नाटकीयता विषे"ातः मंचीयताक दृ"टसँ बाधा उपस्थित करैत होयत ।'[14]

मैथिली नाटक विकास स्वातंत्र्योत्तर कालक छठम–सातम द"ाकक अभ्यन्तर पं"चम बंगालक राजधानी कोलकातामे रहनिहार मैथिल नाट्यानुरागी लोकनि द्वारा बंग अभिनेत्रीक सभक सहयोगसँ आ बिहारक राजधानी पटनामे किछु प्रगति"ाील विचारधारा वाली मैथिलानीक सहयोगसँ मैथिली नाटकक मंचनमे क्रान्तिकारी परिवर्तन आयल । डा. जयकान्त मिश्रक अनुसार 'एहि मार्गकेँ प्रषस्त करबाक श्रेय कलकत्ताक नाट्य मंडली ओ नाट्यकारके ँ छनि । ओ सभ बंगालक राजधानीमे आधुनिकता एवं विषे"ा कए बंगीय महिला अभिनेत्रीक सहयोगसँ विलक्षण परंपरा स्थापित कएलनि । ... ... तहिना पटनाक राजधानीमे महिला अभिनेत्रीक अवतरण एवं नीक नाट्य मंचनक सुविधा पाबि श्री महेन्द्र मलंगिया, श्री ''अक्कू'', ओ श्री सुधांषु 'षेखर' चौधरी मैथिली नाटककेँ अनेक महत्वपूर्ण आयाम देबामे सफल भेला अछि ।'[15]

डा. मिश्रक ई विचार बीसम 'ताब्दीक उत्तरार्द्धक स्थितिक मूल्यांकन अछि । एकैसम 'ताब्दी अबैत–अबैत देषक राजधानी नई दिल्लीमे 'मेलोरंग' आ 'मिथिलांगन' सन निस्सन मैथिलीक नाट्य संस्था अछि । सिने जगतक मिथिलाक सुख्यात निदेषक श्री प्रकाष झा,एहि 'ताब्दीक सुप्रसिद्ध मैथिली नाटककार श्री महेन्द्र मलंगियाक छत्र– छायामे 'मेलोरंग' सदति उन्नति दिष अग्रसर अछि । मुदा, मिथिलाक रीढ गाम–घरमे मैथिली नाटकक स्थिति पहिलोसँ पतनोन्मुख अछि।

एम्हर एकैसम 'ताब्दीमे मैथिली नाटक आषातीत विकास भेल–ई कहबामे हमरा कोनो ननु–नच नहि अछि, मुदा एकर प्रगतिक जे गति रहबाक चाही, से नहि अछि । पटना आ कोलकातासँ आगां बढि ई आब अपन देषक राजधानी दिल्लीमे सेहो अपन जड़ि गाड़ि चुकल अछि । महिला अभिनेत्री आब केवल दिल्लीए कोलकाता पटना धरिमे नहि, दरभंगो–मधुबनी–सहरसा, मधेपुरा, समस्तीपुर नगरो सभमे उपलब्ध भऽ जाइत छथि । प्रकाष, ध्वनि आ मंचक साज–सज्जामे कोनो भा"ाक नाटकसँ मैथिली नाटकमे त्रुटि आ कमी नहि दृ"टगोचर होइछ ।

तथापि किछु वस्तु एहन अछि जे एकर विकासक धारके ँअवरुद्ध कयने अछि, कुण्ठित कयने अछि । मैथिली भा"ाक नाभिकुण्ड गामीण प्रक्षेत्रमे एखनो मैथिली नाटकक मंचन गोटपगरे होइत अछि । तहिना गाम, टोलमे महिला अभिनेत्रीक स्थिति एहि एकैसमो 'ताब्दीमे चिंतनीये अछि।

इतिहासकार डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीष' जे अनुमान बीसम 'ताब्दीक उत्तरार्द्धमे कयने छलाह से हमरा एखनहुँ पूर्णतः प्रासंगिक बूझि पड़ैत अछि–'नाट्य साहित्यक इतिहासक विवेचन करबाक पष्चात् ई स्प"ट भए जाइत अछि जे विषे"ातः गत दषकसँ विभिन्न संस्था द्वारा रंगमंचीय आधार प्रदान कए एकटा नव विकस–धारा प्रदान करबाक सुसंघटित प्रयास होइतहुँ मैथिलीक नाट्य–साहित्यक परपरा कहुना कहुना जीबि रहल अछि । चल–चित्रक ओ आब भिडियो तथा दूरदर्षनक आषातीत उन्नतिसँ अभिनयक उत्साह दिनानुदिन क्षीण भेल जाइत छैक आओर ते ँ एकांकी वा नाटकक रचना दिसि यदि कोनो साहित्यकार प्रवृत्त छथि तँ एकरा

साहित्याभिव्यक्तिक एकटा विधा मात्र मानि । सम्प्रति जेहन स्थिति अछि, ताहिसँ एहि परम्पराक आषा एही दृ"टएँ कए सकैत छी।'[16]

अतएव सोझ 'ाब्दमे कही तँ स्वातंत्र्योत्तर भारतमे मैथिली नाटक प्रगतिक पथपर मंद गतिसँ अग्रसर अवष्य अछि, मुदा ओ एकबगाह अछि । ओकर विकास मैथिलीक असल क्षेत्र, मैथिलीक डीहपर मात्र नामक लेल भेल प्रतीत होइत अछि । हँ, ओ हिन्दीक कवि जय"ांकर प्रसादक चिंतन 'भारत माता ग्राम वासिनी'क विपरीत अखन 'मैथिली नाटक नगर विकासिनी' भऽ गेल अछि । गाम–घरक जे स्थिति एखन अछि ओहि हिसाबँ एहिठाम एकर अत्यधिक विकासक कोनो विषे"ा संभावना हमरा बहुत दूर–दूर धरि दृ"टगोचर नहि भऽ रहल अछि!!0!!

संदर्भ संकेत–

1.मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकास–डा.लेखनाथ मिश्र, पृ. 15.
2.'ाब्दकल्पद्रुम –राधाकारन्त देव, दी चौखम्बा संस्कृत सीरिज बर्क नं. 93 वाराणसी, 1 सं. 1961, भाग–2,.पृ 918
3.नाट्यषास्त्र–भरतमुनि, अध्याय–1, 'लोक–112.
4.तत्रैव, 'लोक–107.
5.अभिनय दर्पण–नन्दिकेष्वर। 'लोक 1, पृ. 81.
6.देखू, मैथिली साहित्यक इतिहास–मिथिलाक किरतनिआ नाटक, पृ.–164
7.देखू, मै. नाटकक उद्भव ओ विकास–डा.लेखनाथ मिश्र, पृ. 64
8.मैथिली साहित्यक इतिहास–डा. जयकान्त मिश्र, सा. अ. नई दिल्ली, पृ. 62.
9.तत्रैव, पृ. 258–59
10.मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकास–डा.लेखनाथ मिश्र, पृ.315.
11.देखू, .मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकास–डा.लेखनाथ मिश्र, पृ. 401सँ 415 (परिषि"ट)।
12.मैथिली साहित्यक इतिहास–डा.दुर्गानाथ झा 'श्रीष'–भरती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, पृ. 275.
13.तत्रैव।
14.मैथिली साहित्यक इतिहास–डा. मायानन्द मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ..–290
15.मैथिली साहित्यक इतिहास–डा. जयकान्त मिश्र, पृष्ठ–263.
16मैथिली साहित्यक इतिहास–डा.दुर्गानाथ झा 'श्रीष'–पृ.305.

सम्पर्क:–

ग्राम–कोठिया, पो–रोसड़ा, जिला–समस्तीपुर, पिन–848210 मो.9431427065
e-mail-sunilsahu.dbg@gmail.com.

❖